विषय : हमारी दुनिया को नवीनीकृत करें

कुछ समय पहले मणिपुर के एक छोटे से शहर चुराचंदपुर में, वहाँ एक दिन में बहुत भारी बारिश हुई और बहुत ही कम समय में जैसे ही पास की नदी में पानी का स्तर बढ़ा तो बहुत से घर जलमग्न हो गए। इस घटना ने बहुत से लोगों को आश्चर्यचकित किया- इतनी छोटी अवधि में भारी वर्षा से भयंकर बाढ़ कैसे आ सकती है? इस प्राकृतिक आपदा के लिऐ एक संभावित कारक आसपास की पहाड़ियों में क्रूरता से वनों की कटाई करना है, जिसने बारिश का पानी रोकने के लिए धरती पर कुछ नहीं छोड़ा । विडंबना यह है कि पहाड़ियों पर कुछ विशेष पौधे उगाकर आसान पैसे बनाने के लिऐ कुछ लोगों ने घातक रसायनों का उपयोग करके जड़ों को भी नष्ट कर दिया और मिट्टी को भूस्थलन और बाढ़ जैसी विकट परिस्थिती के प्रति कमज़ोर कर दिया। यह दुनिया भर के कई घातक पारिस्थितिक संकटों का एक छोटा सा उदाहरण है।

वैश्विक पारिस्थितिक संकट हमें परमेश्वर को तथा हमारे और हमारी सृष्टि के प्रति उनके प्रेम पर पुनर्विचार करने के लिए कहता है। प्राकृतिक आपदाओं के कारण निर्दोष लोगों को नुकसान पँहुचते समय परमेश्वर को कैसा महसूस होता है? जब हम अपने लालच और आनन्द को संतुष्ट करने के लिए प्रकृति का शोषण करते है तो परमेश्वर को कैसा लगता है? परमेश्वर की संतान होने के रूप में हमारी क्या ज़िम्मेदारी है ? इस छोटे प्रतिबिम्ब मे हम तीन महत्वपूर्ण चीज़ों को देखेंगे जो एक दूसरे से निकटता से जुड़ी हैं।

सबसे पहली बात – बाइबल हमें स्पष्टता से बताती है कि परमेश्वर, जिसने दुनिया को बनाया (उत्पत्ति 1:1) और उसके बिना कुछ भी अस्तित्व में नहीं होता (युहन्ना 1:3) । परमेश्वर का वचन लगातार बताता है कि वो संसार से प्रेम करते हैं इसलिए उन्होंने अपना एकमात्र पुत्र दे दिया । दूसरे शब्दों में परमेश्वर उन सब चीज़ों से प्रेम करते हैं जो उन्होंने बनाई है और इसमें सृष्टि भी शामिल है (युहन्ना 3:16)। यह सृष्टि के निर्माण के वर्णन से स्पष्ट हो जाता है जहाँ कहा गया है कि य तब परमेश्वर ने सब कुछ जो उसने बनाया था देखा और वह सब बहुत अच्छा था (उत्पत्ति 1:31 एनआईवी)। यहाँ पर विशेष बात यह है कि ब्रह्मांड में सब कुछ परमेश्वर ने बनाया है और सब कुछ बहुत अच्छा है। अक्सर हम मानते हैं कि मनुष्य परमेश्वर की सबसे महत्वपूर्ण रचना है, क्या इसलिए वे बाकी सब सृजित वस्तुओं के साथ कुछ भी कर सकते हैं? परन्तु बाइबल हमें बताती है कि कोई भी और कुछ भी व्यर्थ नहीं है, क्योंकि परमेश्वर ने सब कुछ विशेष उद्देश्य से बनाया है। मनुष्य उस सब को बुरा नहीं कह सकता जिसे परमेश्वर अच्छा कहते हैं। उदाहरण के लिऐ हम नहीं कह सकते कि घोंघा बेकार में ही बनाया गया है, क्योंकि हमें नहीं पता कि परमेश्वर की विस्तृत योजना में उनकी क्या भूमिका है।

दूसरी बात - परमेश्वर का वचन हमें बताता है कि सृष्टि हताशा के आधीन है और वह क्षय से अपनी स्वतंत्रता और महिमा की प्रतीक्षा कर रही है (रोमियो 8:18-21)। जैसे हमने देखा कि परमेश्वर ने सभी कुछ और हमें भी एक उद्देश्य से बनाया है। अक्सर या ज्यादातर समय मनुष्य अपनी ज़िम्मेदारी को न निभाते हुए, परमेश्वर की अवज्ञा करते हैं, परन्तु प्रकृति ईमानदारी और धैर्य से अपना कार्य करती है। जैसे कि हम बीज बोते हैं और पृथ्वी उत्पादन और पौधों को पोषण देती है। इसी प्रकार हमारे आसपास के पेड़ हमारे लिए स्वच्छ वायु बनाते हैं, जब हम रात में सो जाते हैं। यह बताता है कि मनुष्य सहित सम्पूर्ण प्रकृति एक दूसरे पर निर्भर करती है, क्योंकि कोई दूसरे के बिना नहीं रह सकता। यह परमेश्वर की इच्छा है कि उनकी सारी सृष्टियाँ जिनको वो अच्छा कहते हैं, अपने अस्तित्व के उद्देश्य को पूरा करने के लिए जीवित रहें और वे एक दूसरे पर निर्भर रह कर ये कर सकते हैं।

उसी समय, अपने कर्तव्यों को ईमानदारी से निर्वहन करने के बावजूद प्रकृति भी कष्ट सहती है और अपनी मुक्ति के दिन की प्रतीक्षा करती है (रोमियो 8:21)। प्रकृति दो स्तरों पर ग्रस्त है, पहला कि वह आदम के पाप या पतन की वजह से और दर्द सहती है और मृत्युग्रस्त है, दूसरा आज पृथ्वी मानव लालच और आसान तथा तेज़ी से पैसे कमाने के लिए संसाधनों के बेरहम विनाश के कारण प्रकृति अत्यंत पीड़ा और कष्ट सहती है । क्या होता है जब प्रकृति ग्रस्त होती है, हमें इसके बारे में क्यों चिंचित होना चाहिए, हम पारस्थितिक संकटों के बारे में चिंतित है क्योंकि जब प्रकृति ग्रस्त होती है, तो वह उस उद्देश्य के लिए नहीं जीती जिसके लिए परमेश्वर ने

उसे रचा है और मनुष्य भी इससे पीड़ित होता है। दूसरे शब्दों में जब प्रकृति मनुष्यों का समर्थन करने में असमर्थ होती है, हम स्वयं भी अपने जीवन के लिए संघर्ष करते हैं। यही सब हम आज अपने कस्बों और शहरों में देखते हैं। हम बारंबार और चरम प्राकृतिक आपदाओं, जलवायु परिवर्तन, पानी की कमी और अधिक ऐसी परिस्थितियों का अनुभव करते हैं। हम यह भी जानते हैं कि हज़ारों किसानों ने सूखे के कारण अपना जीवन गवाँ दिया है जैसे महाराष्ट्र, आंध्र प्रदेश आदि में। क्या परमेश्वर इसके बारे में ध्यान देते हैं, वो परवाह करते हैं? हमने पहले ही सृष्टि के निर्माण के वर्णन में देखा है, कि परमेश्वर ने सब कुछ जो उन्होंने बनाया था, उसे बहुत अच्छा कहा है। इसी के आधार पर हम कह सकते हैं कि जब सृष्टि कष्ट से गुज़रती है तो परमेश्वर के हृदय मे पीड़ा होती है। दूसरे शब्दों में परमेश्वर अपनी सृष्टि के साथ पीड़ाग्रस्त होते है क्योंकि वो उससे प्रेम करते हैं (युहन्ना 3:16)।

तीसरी बात – यदि प्रकृति मानव क्रिया के कारण पीड़ित होती है और परमेश्वर उसकी पीड़ा से प्रभावित होते है, तो यह हमारा कर्तव्य है कि हम हर संभव स्तर पर पारस्थितिक संकटों का उत्तर दें। यदि परमेश्वर की सेवा करना उनकी इच्छा पूरी करना है तो पारस्थितिक संकटों का उत्तर देंना परमेश्वर की इच्छा पूरी करने का एक हिस्सा है। इस वर्ष के लिए हमारा विषय है – हमारी दुनिया का नवीनीकरण और यशायाह 58:12 (ईएसवी) में दिए गए पद हमें यह बताते हैं कि ''और तेरे वंश में के लोग पूर्वकाल में विध्वंस हुए खण्डहरों का पुनः निर्माण करेंगे, तू पुरानी पीढियों की नींव को पुनःस्थापित करेगा, और तुझे दरारों को भरनेवाला, तथा निवास के लिए मार्गों का सुधारनेवाला कहा जाएगा।

हम यहाँ दो चीज़ें देखते हैं – सबसे पहले कि यशायाह एक भविष्यवक्ता थे और याजकों के विपरीत, भविष्यवाणी की सेवकाई वंश परंपरा द्वारा प्राप्त नहीं होती थी। परमेश्वर कुछ विशेष लोगों को विशेष परिस्थिती में विशेष संदेश के लिए भविष्यवक्ता नियुक्त करते हैं। अधिकतर मामलों में अपने परमेश्वर के द्वारा दिए गए संदेश के साथ, भविष्यवक्ताओं ने अपने अधिकारियों, राजाओं और समानता में पुजारियों के समक्ष अपने जीवन को खतरे में डाला है। यशायाह के लिए यह पुनःनिर्माण, मरम्मत और पुनःस्थापित करने के लिए परमेश्वर की बुलाहट थी। प्रश्न यह है कि जो पहले ही नष्ट हो चुका है उसका पुनःनिर्माण क्यों करना है ? यह हमें याद दिलाता है कि पूरी दुनिया की भलाई के लिए परमेश्वर चिंतित है। हमारी दुनिया के लिए परमेश्वर की यह चिंता उनकी देखभाल से संबंधित है, जो तथाकथित विकास की प्रक्रिया में बर्बाद और टूट गई है।

दूसरा प्रश्न यह है कि किसका पुनःनिर्माण, मरम्मत और पुनःस्थापना करनी है, दिए गए पद हमें स्पष्ट करते हैं कि ये एक नई पीढ़ी का आधार हैं, वे सडंकें और स्थान जिन्हें मरम्मत की आवश्यकता है। यह शब्द हमारे पर्यावरण के संदर्भ में है, उदाहरण के लिए हमारे शहरों और कस्बों में नदियाँ और हमारी सड़कों के किनारे पड़ी गंदगी, इत्यादि। इसके इलावा मरम्मत शब्द का अर्थ है कि जो पहले से है उसके द्वारा कुछ नया बनाना'। दूसरे शब्दों में परमेश्वर सृष्टि के समय जिसे अच्छा कहते हैं, उसकी देखभाल और संरक्षण होना चाहिए।

अंत में निष्कर्ष के रूप में जब हम परमेश्वर के प्रेम और अनुग्रह के द्वारा उनकी सन्तान कहलाते हैं तो हमें परमेश्वर की पुकार के प्रत्युत्तर में उचित कार्रवाई करनी चाहिए। जब प्राकृतिक आपदाओं के कारण निर्दोष लोगों को नुकसान होता है तो परमेश्वर का हृदय दुखता है। परमेश्वर प्रकृति के साथ पीड़ा में हैं, क्योंकि मनुष्य ने उसे बेरहमी से अपने लालच और आनंद की संतुष्टि के लिए नष्ट कर दिया है। परमेश्वर से प्रेम करना उनकी इच्छा को पूरा करना है और सृष्टि की देखभाल करना भी उनकी इच्छा को पूरा करना है।

आइए हम अपनी दुनिया को नवीनीकृत करें!